पर सुब्ह से शाम तक सूरज की गर्मी में शहीदों की लाशों का उठाना और फिर ख़ैमे की तरफ पलटना और फिर बहत्तर के दाग़, अज़ीज़ों के सदमें और उनकी लाशों का उठाना, जवान बेटे का आँख की रौशनी ले जाना और भाई का कमर तोड़ जाना, और अपने हाथों पर एक दूध पीते बच्चे का दम टूटते हुए सम्भालना और तलवार की नोक पर अभी–अभी उसकी क़ब्र बनाकर उठना। अब इस हाल में नफ्स के जज़बात का तक़ाज़ा तो यह है कि आदमी ख़ामोशी से तलवारों के सामने अपना सर बढ़ा दे और खंजर के आगे गला रख दे मगर हुसैन (अ0) इस्लामी तालीम की हिफाज़त करने वाले थे जुल्म के सामने सुपुर्दगी शरीअत के क़ानून के ख़िलाफ है। हुसैन (अ0) ने अब बचाव का फ़र्ज़ अन्जाम देने और ख़ुदा के दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए तलवार उठाई और वह जिहाद क्या जिसने भूली हुई दुनिया को हैदर (अ0) वाली ख़ूबियों की याद दिला दी और इस तरह दिखा दिया कि हमारे काम और अमल, नफ्स के जज़बात और तबीयत की ज़रूरतों के गुलाम नही हैं बल्कि फराएज़ और वाजिबात को पूरा करने और रब के हुक्मों को पूरा करने के गुलाम होते हैं चाहे फितरी ज़रूरतें इसके कितनी ही ख़िलाफ हों।

यही इन्सानियत की वह मेअराज है जिसको इमाम हुसैन (अ0) के बाद वाले बताते रहे और वही आज हुसैन (अ0) के किरदार में बहुत ही चमक के साथ नज़र आ रही है।

dcyZk

आसीफ़ जायसी

कर्बला ममनून है संसार तेरा आज तक
नौऐ इन्सानी को है इक़रार तेरा आज तक

किस क़दर दुरबार है दरबार तेरा आज तक
ज़र्रा–ज़र्रा है दुरे शहवार तेरा आज तक

सोने वालों को जगाती है सदाए इंक़िलाब
है सफर में जज़्ब–ए–बेदार तेरा आज तक

ता क़यामत मदरसा है तू ज़माने के लिए
शहर है कुर्आने लाला ज़ार तेरा आज तक

शरबते दीदार में तेरे है मेराजे हयात
कौन है आसूद–ए–दीदार तेरा आज तक

ओढ़ ली तू ने रिदाए ज़िन्दगी, है इसलिए
मौत से अज़ाद हर बीमार तेरा आज तक

हाकेमियत क्यों बशर की लरज़ा बर अन्दाम है
कल से लेकर जारी है इन्कार तेरा आज तक

नफ़्स की तामीर होती है तेरे माहोल में
काम में मसरूफ है मेअमार तेरा आज तक

तेरी खुशबु–ए–वफा से है मुअत्तर काएनात
किस क़दर शादाब है गुलज़ार तेरा आज तक

सर यज़ीदियत उठाए भी तो वह कैसे उठाए
जौरो इस्तेबदाद पर है वार तेरा आज तक

तेरे मक़सद पर कभी भी आँच आ सकती नहीं
है पसे पर्दा अमानत दार तेरा आज तक

आलमे इन्सानियत की कर रहा है शान से
रहनुमाई क़ाफिला सालार तेरा आज तक

क्या हक़ीक़त है ''आसीफ़े जायसी'' की सच यह है
मोतक़िद है हर बड़ा फन्कार तेरा आज तक